गजानन माधव मुक्तिबोध का रचना संसार

गजेन्द्र बघेल
शोध-छात्र
कलिंगा वि.वि.नया रायपुर(छ.ग.)
डा.अजय कुमार शुक्ल
प्राध्यापक कला एवं मानविकी संकाय
कलिंगा वि.वि.नया रायपुर(छ.ग.)

शोध-सारांश

आधुनिक कवियों में मुक्तिबोध का विशिष्ट स्थान है। आज का कवि मुक्तिबोध को जितना अपने निकट पाता है उतना संभवतः किसी अन्य कवि को नहीं। मुक्तिबोध आज के कवियों के अधिक निकट इसलिए हैं क्योंकि मुक्तिबोध जी के काव्य में आधुनिक सभ्यता की विद्रुपताओं, युग की विसंगतियों और युगीन संदर्भ में व्यक्ति के मन की पीड़ा, घुटन, संत्रास, निराशा, कुंठा और हताशा का मार्मिक चित्रण के साथ, मुक्तिबोध का काव्य अध्येता को एक गहरा अध्ययन कराने की सामग्री प्रदान करती है। मुक्तिबोध के साहित्य में एक सामाजिक चेतना तथा जटिल यथार्थ की प्रभावशाली अभिव्यक्ति हुई है। मुक्तिबोध का साहित्य अनास्था और निराशा का काव्य नहीं है। उसमें सद् और ज्ञान का आलोक है। मानव तथा मानव की शांति के प्रति अपूर्व विश्वास और दृढ़ आस्था है। मुक्तिबोध के साहित्य में मानवतावादी चिंतन की अभिव्यक्ति हुई है और मुक्तिबोध ने जिस काव्य सृजन की प्रथा चलाई उसमें एक नूतन शिल्पबोध और सौदर्यबोध की सृष्टि हुई है।

मुक्तिबोध संघर्षशील कवि हैं उनका जीवन संघर्षों का एक अटूट सिलसिला रहा है। उनका जीवन अधिकांशतः कष्ट में बीता। एक मध्यम वर्गीय परिवार जीवन संघर्षों में कितना व्यस्त रहता है और घोर निराशाएं ही प्रायः कष्टों के अनुभव करने पर सारे जीवन को ग्रास लेती है, मुक्तिबोध जी इसके जीता-जागता उदाहरण है। मुक्तिबोध की विशेषताएं यह है कि कष्टों ने उनकों निराशावादी नहीं बनाया। उनकी रचनाएं यह प्रमाणित करती है कि कष्टों के प्रति एक जुगुत्सा का भाव अवश्य है पर निराशा का नहीं। आज का युग बौद्धिकता का युग है, और उस बौद्धिकता का मुक्तिबोध पर गहरा प्रभाव पड़ा है। उपेक्षितों, पद-दलितों और शोषितों का जीवन कितना वेदनापूर्ण होता है। इसका स्वयं अनुभव मुक्तिबोध जी ने किया था। इसलिए उनके पूरे साहित्य में केवल मौखिक अनुभूति मात्र अभिव्यक्त नहीं हुई है। मुक्तिबोध का जीवन अपने जनसंपर्क से और यथार्थवाद की भीषण हृदय विदारक परिस्थिति से और विषमता के दारूण प्रहारों से मर्माहत अवश्य हुआ है, पर विशुद्ध समाजवादी और मानवतावादी युगीन विचारकों ने उनको कितना झकाझोर डाला है। इसे उनकी रचनाओं में हम जान सकते हैं।

बीजशब्द-

मुक्तिबोध, यथार्थवाद, संघर्ष, शोषक।

प्रस्तवना-

आधुनिक हिन्दी काव्य जगत के सशक्त हस्ताक्षर गजानन माधव मुक्तिबोध का जन्म 13 नवंबर 1917 को ग्वालियर राज्य के मुरैना जिले के श्योपुर गांव में एक मराठी परिवार में हुआ था। मुक्तिबोध के पूर्वज महाराष्ट्र के जलगांव (खानदेश)के निवासी थे।मुक्तिबोध के पिता का नाम श्री माधवराव मुक्तिबोध तथा माता का नाम श्रीमती पार्वती बाई मुक्तिबोध था।गजानन माधव मुक्तिबोध जी के परिवार में माता-पिता के अलावा चार भाई थे।गजानन मुक्तिबोध, शरच्चंद मुक्तिबोध, बसंत मुक्तिबोध तथा चन्द्रकांत मुक्तिबोध।इन सबमें गजानन माधव मुक्तिबोध जी सबसे बड़े थे।

मुक्तिबोध जी की आरंभिक शिक्षा मध्यप्रदेश के विभिन्न शहरों में हुई ,जिसमें उज्जैन,विदिशा तथा सरदारपुर आदि स्थानों में हुई।उनकी इस बंजारेपन की जिंदगी का प्रमुख कारण उनके पिता का सरकारी नौकरी रहा,जिनके कारण उनका अध्ययन एक स्थान पर नहीं हो पाया।उनकी पढ़ाई का क्रम टूटता-जुड़ता हुआ ,घूम-घूम कर हुआ।वह पूरे परिवार में एकलौते उच्चशिक्षित व्यक्ति बन गए,जो पूरे परिवार के लिए गौरव का विषय था।अब धीरे-धीरे मुक्तिबोध की जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण वातावरण का प्रभाव भी पड़ने लगा,और उनकी जिज्ञासा का परिणाम यह हुआ कि माँ की साहित्यिक अभिरूचि उन पर स्पष्ट रूप से दिखने लगी,जिससे उनकी नियमित काव्य रचना प्रारंभ हो गई।

छत्तीसगढ़ के प्रख्यात कहानीकार डॉ परदेशीराम वर्मा ने मुक्तिबोध के संस्मरण साहित्य पर विचार प्रकट करते हु ए उक्त विचारों का समर्थन किया था। डॉ परदेशीराम वर्मा के शब्दों में -""मुक्तिबोध में संग्राम एवं क्रांति का बीजारोपण उनकी माँ ने किया।जिसने मुक्तिबोध का प्रेमचंद को विभिन्न कृतियां अध्यययन के लिए उपलब्ध कराती रही। वास्तव में उनकी माँ और प्रेमचंद की प्रेरणा से ही मुक्तिबोध आधुनिक काव्य के जगमगाते नक्षत्र के रूप में प्रतिस्थापित हुए। "[1]

मुक्तिबोध अध्ययनशील प्रकृति के थे तथा उनकी विषम परिस्थितियां कभी भी उनके अध्ययन को प्रभावित नहीं कर पायीं। वे साहित्य के अध्ययन के साथ-साथ राजनीति,दर्शन,समाज एवं इतिहास विषयक साहित्य का समुचित अध्ययन किया करते थे।तत्कालीन सामाजिक एवं राजनीतिक स्थितियों का वे अध्ययन कर विश्लेषण किया करते थे।उनके अध्ययन का क्षेत्र केवल भारतीय साहित्य या राजनीति तक सीमित नहीं था वरन वे फ्रेंच,रूसी तथा अमेरिकन साहित्य का भी उन्होने पर्याप्त अध्ययन किया था, जिनका प्रभाव उनके साहित्य पर स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।मुक्तिबोध जी के साहित्य में सबसे अधिक किसी विदेशी साहित्य का प्रभाव पड़ा तो वह रूसी साहित्य का था।रूसी साहित्य का जैसा अध्ययन मुक्तिबोध जी ने किया था,शायद ही हिन्दी के किसी कवि ने किया हो।रूसी साहित्यकारों की एक लंबी श्रृंखला है,जिनका अध्ययन मुक्तिबोध जी ने किया था किन्तु सबसे प्रिय साहित्यकार उनके लिए गोर्की थे।गोर्की का प्रभाव हम मुक्तिबोध के रचनाओं का अध्ययन कर समझ सकते हैं कि वे उनके विचारों के कितने करीब थे या यूं कहें कि वे गोर्की के विचारों से प्रभावित थे।पाश्चात्य कवियों में जो मुक्तिबोध जी को सबसे ज्यादा उद्वेलित करता था,वह थे टी.एस.इलियट,यद्यपि वे इलियट के विचारों से सहमत नहीं थे किन्तु उनकी वैचारिक क्षमता के वे कायल थे। मुक्तिबोध जी टी.एस.इलियट को बहुत बड़े कवि और विचारक की श्रेणी में रखते थे और उनकी कविताओं और विचारों पर बहुत बहस करते थे।साहित्यिक महत्व के कवियों के अलावा उन्हें अन्य कवियों ने भी प्रभावित किया,जिन्हें हम लोककवि कहते हैं।उनमें वे रूसी कवि निकोला वेप्सरोव व अमेरिकी कवियित्री एमिली डिकन्सन को पसंद करते थे।कुल मिलाकर मुक्तिबोध जी का ज्ञान बहुमुखी था तथा साहित्य के साथ-साथ अन्य विषयों पर भी अपना पूरा हस्तक्षेप रखते थे।

मुक्तिबोध जी आगे अध्ययन के लिए इन्दौर आ गए,जहां वे अपनी बुआ के पास रहकर क्रिश्चियन कालेज में पढ़ाई करते थे।1942 में उज्जैन के माडल स्कूल में अध्यापक की नौकरी भी किए। 1942 का काल मुक्तिबोध जी के लिए विशेष महत्व का रहा उसका कारण एक यह भी था कि उज्जैन में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना की गई जिसमें मुक्तिबोध जी का सबसे बड़ा योगदान रहा।उज्जैन में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना का प्रमुख मकसद था नए उभरते साहित्यकारों के विचारों का आदान-प्रदान करना।प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना कर मुक्तिबोध जी ने उनके बीच एक नए सोच को प्रतिस्थापित करने का प्रयास किया और सफल भी हुएं।मुक्तिबोध जी सन् 1945 के मध्य में वायुसेना में भर्ती होने के लिए बंगलौर गए,लेकिन कुछ दिन बाद वे वहां से वापस उज्जैन आ गए।1945 में ही वे उज्जैन से बनारस गए और वहा ंजाकर वे त्रिलोचन शास्त्री जी के साथ हंस पत्रिका के संपादन कार्य में लग गए किन्तु वे वहां भी ज्यादा दिन ठहर न सके।परिस्थितियों से विवश होकर मुक्तिबोध जी को बनारस को भी अलविदा कहना पड़ा।अब बनारस के बाद मुक्तिबोध जी का अगला पड़ाव जबलपुर रहा। जहां के डी.एस.जैन स्कूल में अध्यापन कार्य में लग गए।अध्यापन के साथ ही साथ वे "जय-हिन्द " नामक दैनिक पत्रिका में भी कार्य करते थे।1948 में मुक्तिबोध जी ने अध्यापन कार्य त्यागने के साथ जबलपुर को भी छोड़ दिए और नागपुर की ओर प्रस्थान किए।यहां आकर वे अपने जीवन के फिर नए अध्याय की शुरूवात करते हुए सचिवालय के सूचना एवं प्रकाशन विभाग में नौकरी करने लगे।कुछ समय पश्चात् उनके जीवन का यह अध्याय भी समाप्त हो गया और उन्हें वह नौकरी छोड़नी पड़ी।इसके बाद अनेक मित्रों के

सहयोग से मुक्तिबोध जी को नागपुर रेडियो स्टेशन में न्यूज-रीडर के रूप में नियुक्ति मिली।इस नौकरी में मुक्तिबोधजी को कुछ आशाएं दिखने लगीं।1956 में उनका स्थानांतरण भोपाल रेडियो स्टेशन कर दिया गया,मगर वे वहां नहीं गए।

षाजानन माधव मुक्तिबोध को नागपुर से छुटकारा तब मिला जब राजनांदगांव में कालेज खुला।18 जुलाई 1958 से मुक्तिबोध जी नागपुर से राजनांदगांव की ओर प्रस्थान कर राजनांदगांव के दिग्विजय महाविद्यालय में व्याख्याता के रूप में अध्यापन करना शुरू किया।नागपुर में रहते हुए जिस शारीरिक व मानसिक यातना का सामना किया।वह अब राजनांदगांव में नहीं था या यों कहें कि उन्हें उस यातना भरे जीवन जीवन से मुक्ति मिली।यदि हम उनके यायावर भरे जीवन में झांके तो सबसे ज्यादा कष्ष्ट का सामना उन्हें नागपुर में ही करना पड़ा[2]

1958 का काल जहां मुक्तिबोध जी ने अध्यापन कार्य प्रारंभ किया।वह राजनांदगांव एक छोटा सा शहर ,जहां का एक छोटा सा नया महाविद्यालय जहां साहित्यिक वातावरण या गतिविधि लगभग शून्य थी।परंतु जब यहां मुक्तिबोध जी की नियुक्ति हुई,तब वे प्रसन्न थे,इस बात को स्वयं उन्होने कई बार स्वीकार किये हैऔर वे कहते है- ”जिंदगी में काफी ठुकाइ-पिटाई के बाद अब राजनांदगांव आ पहुंचा हूं।यहां का कालेज नया-नया है।सभी लोग सहयोगा की भावना से प्रेरित है।यहां काफी आराम से हंू।श्री शरद कोठारी व प्राचार्य श्री किशोरी लाल शुक्ल जी के प्रयत्नों से ही मेरे जीवन का नया रास्ता खुला है।उन्हीं के सद्भावनाओं एवं सहानुभूति ने मेरी बुझती हुई जीवन रोशनी को प्रज्जवलित किया हैं।[3]

जिस महाविद्यालय में मुक्तिबोध जी की नियुक्ति हुई थी वह राजा दिग्विजय दास की एक पुराने किले में स्थित था।जिसे हम आज भी दिग्विजय महाविद्यालय के नाम से जानते है।प्रारंभ में जब मुक्तिबोध जी राजनांदगांव आये तो उनके रहने की व्यवस्था नहीं होने के कारण राजनांदगांव के बसंतपुर में रहते थे। किन्तु कुछ समय पश्चात् कालेज के पिछले हिस्से को उनके रहने के लिए प्रदाान किया गया। मुक्तिबोध जी जिस मकान में रहते थे आज उसे शासन के सहयोग से ”मुक्तिबोध स्मारक” का रुप दे दिया गया है।यह कई कमरों वाला मकान भूतहा और अकेलापन लगता ही है। यहां आने के बाद मुक्तिबोध जी के सभी पुराने साथी छूट गए, जिससे अब उन्हें पढ़ने लिखने के लिए ज्यादा समय मिलता है। यह मकान मुक्तिबोध जी को लंबी कविताएं लिखने के लिए अधिक उपयुक्त लगता था।

राजनांदगांव में मुक्तिबोध जी को निवास स्थान दिग्विजय कॉलेज में मिला था वो पहले रंगशाला थी। अपने मित्र श्री हरिशंकर परसाई जी को अपने निवास स्थान के संबंध में इस प्रकार जानकारी दी- ‘‘जहाँ आप बैठे है वहाँ किसी समय राजा की महफिल जमती थी, खूब रौशनी होती थी, नाच गान होते थे तब ऐश्वर्य की चकाचौंध थी, कुछ भी कहो पार्टनर, फ्युडलिज्म (सामंतवाद) में एक शाम थी।.[4]

राजनांदगांव शहर के चारों कोनो में चार बड़े तालाब जो तात्कालीन समय में राजाओं ने अपने महल की सुरक्षा के लिए बनाए थे आज शहर की सौंदर्य को बढ़ाते है। यहाँ की बी.एन.सी. मिल एवं शैक्षणिक परिवेश ने उन्हें बहुत अधिक प्रभावित किया। वे बी.एन.सी. मिल की चिमनियों से उठती हुई धुएॅं को देखकर भविष्य के औद्योगीकरण की कल्पना करते थे तथा रेल की पटरियों पर चलते हुए इक्कीसवीं सदी के परिवहन साधनों के दुरगामी प्रभाव के विषय में विचार किया करते थे। इस प्रकार मुक्तिबोध दूरदर्शी व्यक्ति भी थे। मुक्तिबोध जी राजनांदगांव में आकर अपने अध्ययन को केवल साहित्य तक ही सीमित नहीं रखा बल्कि उन्होंने यहां की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक व दार्शनिक सभी पक्षों का अध्ययन कर लिया। मुक्तिबोध ने राजनांदगांव के विषय में यह अध्ययन गहराई में जाकर अपनी वैचारिक मान्यताओं के आधार पर की। यह न केवल सिद्धांत थी बल्कि यह वास्तविक जीवन अनुभवों पर आधारित थी।

किशोरीलाल शुक्ल जैसे सुरक्षा प्रदान करने वाले बुजुर्ग मिले। स्वयं श्री पदुमलाल पुन्नालाल बक्शी जैसे साहित्य सेवा से जुड़े लोगों का सानिध्य मिला। सर्वश्री मेघनाथ कन्नौजे टी.आर. लुनावत जैसे मित्र कॉलेज मे सहकर्मी के रूप में मिले। कॉलेज के बाहर राजनांदगांव में मुक्तिबोध जी का लेखन कार्य पूरे चरम पर था। यहां उन्हें शैक्षणिक परिवेश मिला। श्री उन्हें प्रकाश राय, शरदकोठारी, नन्दूलाल चोटिया, अटलबिहारी दुबे, कन्हैया लाल अग्रवाल, जसराज जैन आदि मित्र मिले। निश्चय ही राजनांदगांव में मुक्तिबोध के लिए इन सबसे एक अनुकूल वातावरण तैयार हो गये।

राजनांदगांव में रहकर मुक्तिबोध जी ने अपनी लंबी-लंबी कविताएं पूरी की। यहां अनेक लेखन कार्य पूरे किए। यहां रहते हुए ही मुक्तिबोध जी ने एक पुस्तक लिखी ‘‘भारतः इतिहास और संस्कृति। इस पुस्तक का कुछ भाग छोटी-सी पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुआ, जो मध्यप्रदेश सरकार द्वारा सेकेण्डरी स्कूल के पाठ्यक्रम में शामिल किया गया था। लेकिन कुछ साम्प्रदायिक तत्वों की मांग पर मध्यप्रदेश सरकार ने 19 सितम्बर, 1962 को इस पुस्तक पर प्रतिबंध लगा दिया। इस पर मुक्तिबोध जी ने बड़े ही विक्षिप्त होकर कहा- ‘‘मध्यप्रदेश सरकार के इस कार्य ने मुझे बुरी तरह हिला दिया और मैं स्वयं को अत्यधिक असहाय महसूस कर रहा हं ू। मेरी जीवन की समस्त आशाएं बुझ गई!‘‘ उन्हे े ं इस बाद की गहरी पीड़ा थी कि उसकी पुस्तक की आत्मा को किसी ने नहीं पहचाना। उन्होंने अत्यन्त ही दुःख के साथ लिखा- ‘‘ यहां अत्यन्त दुर्भाग्य की बात है कि सम्भवतः किसी निर्णय देने से पहले किसी ने ध्यानपूर्वक मेरी पुस्तक नहीं पढ़ी।[5]

श्री किशोरीलाल शुक्ल जी ने कहा- ‘‘अगर कार्ट में इस आदेश को चुनौती दी जाए, तो निश्चय ही सफलता मिलेगी। ‘पर वे ऐसा कोई लड़ाई झगड़ा नहीं चाहते थे। मुकदमेबाजी और लड़ाई झगड़ा से वे सदैव बचे रहना चाहते थे। इस पुस्तक के विषय में मुक्तिबोध जी ने कहा था- ‘‘यह पुस्तक की सम्पूर्ण विषयवस्तु ऐेतिहासिक तथ्यों एवं शासन मान्य इतिहास के पुस्तकों से ली गई है। ‘[6]मगर इस ढंग से इस पुस्तक को नष्ट किया जाना उसके लिए सर्वाधिक झटका देने वाली बात थी।

कुल मिलाकर मुक्तिबोध जी को राजनांदगांव ने उसकी ययावरी जिंदगी से छुटकारा दिलाकर स्थायित्व एवं निश्चिंतता प्रदान की। मुक्तिबोध के जीवन के संघर्षों का अटूट सिलसिला राजनांदगांव में ही थमा। राजनांदगांव ने मुक्तिबोध का भय, भुख और अशांति से छुटकारा दिलाकर सुरक्षित महसूस करने की स्थिति प्रदान की। मुक्तिबोध की असाधारण प्रतिभा को राजनांदगांव मे ही समझा गया। जिस रचना संसार ने उन्हें जीवन के इस चरम स्थ्तिि में पहं ुचाया वह राजनांदगांव ही है। राजनांदगांव ही वह आश्रय स्थल है, जहां मुक्तिबोध जी का काव्य उपजा, जो उनके चले जाने के पश्चात् भी महानता की पदवी से विभूषित किया जाता रहा है।

निष्कर्ष -

मुक्तिबोध अपनी बंजारेपन की जिंदगी के अंतिम पडाव में राजनांदगांव पहुंचे।उन्होने 1958 से 1964 तक का समय राजनांदगांव में बिताया।यहां रहकर उन्होने अपनी साहित्यिक छबि को उभारा और जमकर लिखा।उनके जीवन को स्थिरता राजनांदगांव में ही मिली।इस बात को स्वयं उन्होने स्वीकार किया है।

निःसंदेह मुक्तिबोध की रचनाएं उनके प्रबुद्ध विचारक, प्रखर समाज सेवा, संवेदशील साहित्यकार, रचनात्मक प्रतिभा और मौलिक चिंतन का सुंदर प्रमाण है। उनकी प्रत्येक रचना सुदृढ़ विचारों की मिट्टी के घेरों में भरी निर्मल सोंधे जल का सरोवर है, जिसमें तरंगों के साथ-साथ अन्य असंख्य छबियां विद्यमान है। उनकी रचनाएं शब्दों का इंद्रजाल नहीं, जीवन का स्रष्ठा है। उन्होंने अपनी अनुभव-व्यापकता, संवेदशीलता तथा अभिव्यक्ति की ईमानदारी से ही ऐसे साहित्य का सृजन करने में समर्थ हो सकी, जिनकी कर्मस्थली राजनांदगांव रही।

मुक्तिबोध की आकस्मिक मृत्यु ने उन्हे एकाएक विशिष्ट बना दिया। उनके साहित्य की चर्चा चारों तरफ होने लगी। उनकी कविताएं,लेख,कहानियां तथा संस्मरण पत्र-पत्रिकाओं में प्रमुखता के साथ छपने लगे। ऐसा लगा मानों सभी - पत्रिकाएं मुक्तिबोध मय हो गई।जीवन पर्यंत जिनकी रचनाओं को हासिए पर रखा गया,मृत्यु के बाद उनकी रचनाओं को बडे-बडे वक्तव्यो के साथ प्रकाशित किया जाने लगाा। मुक्तिबोध को इस युग का महान कलाकार एवं युगदृश्टा निरुपित किया गया। मुक्तिबोध को महान एवं युगदृष्टा बनाने में राजनांदगांव के योगदान को नकारा नहीं जा सकता ।

संदर्भ संकेत

ग्रंथ.सूची	पृष्ठ क्र.
1.आगासदिया-	दिसंबर 2008 अंक
2.दैनिक सबेरा संकेत में प्रकाशित -	13 नवंबर 2004
3.मुक्तिबोध का पत्र साहित्य -	71
4. मुक्तिबोध का पत्र साहित्य -	84
5. मुक्तिबोध का व्यक्तित्व एवं कृतित्व -	डॉ जनक शर्मा
6.अन्य पत्र पत्रिकाएं	